स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

— डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज

भारतीय साहित्य - ध्वनि सिद्धांत

जिस प्रकार किसी घंटे के ऊपर आघात करने के पश्चात पहले टंकार और फिर मधुर झंकार एक के बाद एक अधिक मधुर ध्वनि निकलती है, उसी प्रकार व्यंग्यार्थ भी ध्वनित होता है। जहाँ पर ध्वनित होने वाला व्यंग्यार्थ प्रधान होता है वहाँ ध्वनि मानी गयी है। ध्वनि सिद्धांत के प्रवर्तक 'आचार्य आनन्दवर्धन' को माना जाता है। आनन्दवर्धन ने लिखा है-

"यत्रार्थ: शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनी कृत स्वार्थौ।
व्यक्त: काव्यविशेष: स ध्वनिरिति सूरिभि: कथित:॥"

अर्थात जहाँ अर्थ और शब्द अपने-अपने अस्तित्व को गौण बनाकर जिस विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं वह ध्वनि कहलाता है। प्रत्येक शब्द का सूक्ष्म प्रतिरूप मानव मन में नित्य विद्यमान रहता है। उससे ही अर्थ स्फुटित होता है। अर्थ जिस शब्द से फुटता है वह स्फोट कहलाता है तथा स्फोट अखण्ड और एकरस होता है यही ध्वनि है।

'ध्वनि' के मुख्यत: तीन भेद माने जाते हैं- (1) वस्तुध्वनि, (2) अलंकारध्वनि (3) रसध्वनि।

वस्तुध्वनि में किसी एक वस्तु से दूसरी वस्तु की व्यंजना की जाती है अर्थात् जहाँ वस्तु व्यंग्यार्थ का अर्थ रूप ग्रहण कर लेता है। जैसे-

"वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा सी
वह दीप शिखा सी शांत भाव में लीन।
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति रेखा सी
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन,
दलित भारत की ही विधवा है।" भारत की विधवा की क्रमश: पवित्रता तेजस्विता, दयनीय दशा द्योतित होती है। पवित्रता आदि वस्तु है।

अलंकारध्वनि में अलंकार की अभिव्यक्ति व्यंग्यार्थ के रूप में होती है उदाहरणत: दास कवि का दोहा - "सखि, तेरो प्यारो भलो दिन न्यारो है जात।
मीत नाहिं बलबीर को पल बिलगाव सोहात॥"
यहाँ सखी के प्रिय से राधा अपने प्रिय कृष्ण का अन्तर बता रही है- यहाँ व्यतिरेक अलंकार व्यंग्य है।

रसध्वनि - जहाँ व्यंग्यार्थ विभाव, अनुभाव और संचारीभाव के संयोग पर आधारित होता है वहाँ रसध्वनि मानी जाती है। इसमें नवरस के साथ भाव, भावाभास, भावोदय, भाव-शबलता, भाव-सन्धि सभी का समावेश किया जाता है। ध्वनि सिद्धांत की स्थापना के साथ भारतीय काव्य-चिन्तन सूक्ष्मतम स्थिति (1) तक पहुँच गया है।

Scanned with CamScanner